बलमदीना तिर्की
समूह की मदद से दी गरीबी को मात

हाइलाइटर : कृषि और मजदूरी करके जीवन बसर करने वाले बलमदीना तिर्की के परिवार ने भी खुशहाली के सपने देखे थे, लेकिन परिस्थितियां निराशा की ओर बार-बार धकेल देती थीं। जूही महिला समूह से जुड़ने के बाद जेएसएलपीएस द्वारा आयोजित क्षमता निर्माण की कुछ ही कार्यशालाओं में उपस्थिति ने बलमदीना में ऐसा जज्बा भरा कि आज वे अपनी मेहनत के बलबूते एक सफल आजीविका पशु सखी के रूप में प्रतिष्ठित हो गयी हैं। उनके जीवन की धारा ही बदल गयी है।

महिलाओं का सशक्तिकरण हो जाये, तो आधी से ज्यादा सामाजिक समस्याओं का निपटारा संभव है। हमने गांव-देहातों में जीवट से काम करते हुए, तमाम विडंबनाओं के बावजूद महिलाएं पुरुषों से कंधा से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं। गांव के गरीब परिवारों की आशाओं का कोई मोल नहीं होता, लेकिन उन्हें सशक्त कर दिया जाये, तो उनकी जिंदगी पटरी पर आ जाती है। गेतलसूद जूही महिला समूह की आजीविका पशु सखी बलमदीना तिर्की ऐसी ही एक मिसाल हैं, जिनकी जिंदगी झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी द्वारा गठित गेतलसूद विकास आजीविका महिला ग्राम संगठन ने बदल दी है।
बलमदीना कहती हैं, मैं बचपन से ही एक गरीब परिवार में पली-बढ़ी। हमारे परिवार में तीन बहन, एक भाई सहित कुल छह सदस्य थे। कमाने वाले के नाम पर एक हमारे पिता ही थे, जो कृषि कार्य एवं मजदूरी करके किसी प्रकार घर का भरण-पोषण किया करते थे। कभी-कभी तो ऐसी स्थिति हो जाती थी कि दो वक्त का खाना भी नसीब नही होता था।
वे कहती हैं, मेरी शिक्षा पांचवी तक ही हो पाई। मेरा विवाह अनगड़ा प्रखंड के गेतलसूद ग्राम में हुआ। पति पेशे से वाहन चालक हैं, जिनका मासिक वेतन 5000 रुपये है, जिससे बड़ी मुश्किल से हमारा घर चलता था। समय के साथ हमारे दो बच्चे भी हुए, जिससे परिवार पर बोझ और बढ़ गया।
इन सबके बीच मैं 8 दिसंबर, 2012 को समूह से जुड़ी। मेरे समूह का नाम जूही महिला समूह है। समूह से जुड़ने के बाद मेरे जीवन में बदलाव आना शुरू हुआ। समूह द्वारा दिये जाने वाले ऋण की सहायता से मेरी छोटी-मोटी जरूरतें पूरी होने लगीं। शुरू में समूह के सदस्यों को समूह के कार्यकलाप की पूरी जानकारी नहीं थी, लेकिन एनआरएलएम, जेएसएलपीएस के द्वारा आयोजित विभिन्न प्रखंड स्तरीय एवं जिला स्तरीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम में भाग लेने से मुझमें आत्मविश्वास आया। इसके बाद मैंने कई छोटे-छोटे ऋण की सहायता से अपने आप को गरीबी से उबार लिया।
एनआरएलएम, जेएसएलपीएस के द्वारा आयोजित विभिन्न प्रखंड स्तरीय एवं जिला स्तरीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम के तहत तीन दिवसीय प्रबंधन प्रशिक्षण में मैंने एक दिन भाग लिया, बुक कीपर्स ट्रेनिंग पांच दिन की हुई, जिसमें मैं एक दिन ही उपस्थित हो पायी, जबकि एपीएस ट्रेनिंग ऑफ ट्रेनर्स के पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में एक दिन और एपीएस ट्रेनिंग ऑफ आईसीआरपी के पांच दिन के प्रशिक्षण कार्यक्रम में एक दिन मैंने हिस्सा लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम से मुझमें इतना आत्मविश्वास आया कि मैं बता नहीं सकती।
समूह प्रशिक्षण के उपरांत मेरा चुनाव आजीविका पशु सखी के रूप में हुआ और समय-समय पर मुझे बकरी पालन का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ, जिसके उपरांत मैंने गांव में बकरियों को कृमिनाशक एवं टीका देने का कार्य शुरू किया। आरंभ में कृमिनाशक एवं टीकाकरण के लिए किसान तैयार ही नहीं होते थे। उनको समझाना कठिन होता था, परंतु मैं अपनी लगन से अपने कार्य में सफल रही और आज यह स्थिति है कि किसान खुद घर आकर कृमिनाशक एवं टीकाकरण के लिए बुला कर ले जाते हैं। मेरी मेहनत काम आयी। अब गांव के लोगों को मुझ पर भरोसा है। वे मुझे अब सम्मान से देखते हैं। बलमदीना कहती हैं कि अब मैं बकरी के अलावा मुर्गी, सूअर, बैल एवं भैंस को भी प्राथमिक उपचार देने में सक्षम हूं। मेरे पास खुद का एक दोपहिया वाहन है, जिससे मैं अपने गांव के अलावा दूसरे गांव में जाकर सेवा दे पाती हूं।
मैं एनआरएलएम, जेएसएलपीएस के द्वारा आयोजित विभिन्न प्रखंड स्तरीय एवं जिला स्तरीय सीआरपी ड्राईव में भी जाती हूं, जहां मुझे प्रतिदिन के हिसाब से 450 रुपये मिलता हैं। यह मेरे लिए खुशी और गर्व की बात है। आज मैं समूह की सहायता से इस काबिल हो गयी हूं कि मैं अपने पति के अलावा अलग से 3000-5000 रुपये कमा लेती हूँ और अपने पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर परिवार को खुशी पूर्वक चला रही हूं। मैं अपने बच्चों को उर्सुलाइन कॉन्वेन्ट में पढ़ा रही हूं। अब जाकर मेरे जीवन में खुशियां दस्तक दे रही हैं।

नाम बलमदीना तिर्की
पति सिलियम तिर्की
उम्र 30 वर्ष
जाति उरांव
ग्राम गेतलसूद

समूह जूही महिला समूह,
पद आजीविका पशु सखी
ग्राम संगठन गेतलसूद विकास आजीविका महिला ग्राम संगठन
संकुल गेतलसूद आजीविका महिला संकुल संगठन
प्रखंड अनगड़ा
जिला रांची
राज्य झारखण्ड